# ओ जाननहारे,....

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन द्वारा संकलित
जैन सिद्धान्त प्रश्नोत्तर माला के सातवें भाग से संकलित)

ओ जाननहारे, जान जगत है असार
तीन लोक अरु तीन काल में शुद्धातम इक सार

पुद् अरु गल स्वभाव से ही ये परमाणु परिणमते।
बंधते बिखरते क्षण क्षण में, अरु दिखते एकाकार॥

मनोहर अरु अमनोहर वस्तु विध-विध रूप बदलते।
हर्ष विषाद करे जीव मिथ्या अज्ञानता अपार॥

चेतन दर्पण निज रस से ही तन धन प्रकाशित करता।
भेदज्ञान बिन निज को भूला, महिमा जड़ की अपार॥

मैं इक चेतन सदा अरूपी, परमाणु सब न्यारे।
इमि जानि जड़ महिमा तज, ध्या निज चेतन शिवकार॥